मनुष्य बना

वा०
१०—

5/45

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

१—प्रकाशन का स्थान : अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि : मासिक
३—मुद्रक का नाम : श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता : भारतीय
ख—पता : शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश

४—प्रकाशक का नाम : श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़

५—सम्पादक का नाम श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता भारतीय
पता : शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़

६—स्वत्वाधिकारी : श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक : परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ मार्च, १९८४

सुधा मितल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३३	जेष्ठ संवत २०४० वि०	अङ्क ८

शब्द

मन मन्दिर में ढूँढिये, मूरत अगम अपार ।
मन्दिर सब बेकाज है, मन मन्दिर है सार ॥
छवि मूरत की अद्भुति, निरख निरख हरसाय ।
ऐसे दरस परस से, एक दिन पूरा दाव ॥
घट में गुरु मूरति बसी, को ढूँढे केहि धाम ।
और सकल भ्रम जाल है, घटमें गुरु का नाम ॥
गुरु तो तेरे पास हैं, मन में देख विचार ।
आओ जाओ कासूँ कहूं, घट में कर गुरु प्यार ॥
जो तू प्यारी गुरू की, अन्तर प्रेम जगाव ।
वही टेक को दृढ़ करो, बनत बनत बन जाव ॥
नयनों अन्दर झांप ले, नयनों कर दीदार ।
नयनों में तेरे गुरु वसें, अन्तर में कर प्यार ॥

—प्रकाशक

। मनुष्य बनो ।।

तू जगदीश जगत का करता, तेरा मन में ध्यान रहे ।
तेरी लगन लगे निस बासर, तेरा निशि दिन ध्यान रहे ।।
तू अनाम तू मायातीता, गुणातीत करुणा सागर ।
सुख सम्पति परलोक बडाई, तुझमें यश और मान रहे ।।
चरनकमलकीभक्तिमिलेस्वामी, भक्तिभावहिय को आवे ।
तेरी प्रीति प्रेम पद का प्रभू, छिन छिन प्रतिछिन गान रहे ।।
दोऊ कर जोड़ करूँ मैं विनती- क्षमा करो अपराध मेरा ।
तेरी सेवा तेरी पूजा, तेरा ही ज्ञान अनुमान रहे ।।
रसना नाम जपे तेरा पल पल, दर्शन की अभिलाष बढ़ी ।
शब्द की ओर निरन्तर मेरे, सुरत निरत का कान रहे ।।
जग की मान बड़ाई न मांगूँ, नही मागूँ धन परिवारा ।
भक्ति दीजे चरन कमल ही, भक्ति से कल्यान रहे ।।
छल चतुराई कपट कुटिलता, काल कर्म से सब हारे ।
शरणागत को सुध प्रभु लीजे, चरन शरन में आन रहे ।।

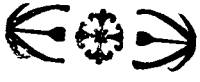

चरन कमल में सीस झुकाऊँ, नित सतगुरु गुन गाऊँ ।
तन मन सब अरपूँ हित चित से, निस दिन ध्यान लगाऊँ ॥
जागूँ तो गुरु का रहे सुमिरन, सोऊँ तो लव लाऊँ ।
गसरी नीद में लय चिंतन कर, आपा आप भुलाऊँ ॥
तुरिया तुरियातीत रहूं जब, मन में रूप बसाऊँ ।
सोवत जगत रूप न त्यागूँ, ऐसी ताड़ी लाऊँ ॥
गुरु मेरे अगम अपार अमाया, दान दया का पाऊँ ।
भक्ति भाव नित बसे निरन्तर, और सकल बिसराऊँ ॥
गुरु की वानी अगम ठिकानी, समझ समझ हरषाऊँ ।
जो कोई पूछे जिज्ञासू बन, प्रेम से ताहि सुनाऊँ ॥
गुरु की कृपा साध की संगत, बुद्धि विबेक बढ़ाऊँ ।
निज स्वरूप का दर्शन पाकर, औरन को दरसाऊँ ॥
भेद भाव का संशय मेटूँ, भरम विकार नसाऊँ ।
साँग मेहर कुछ ऐसी होवे, सबको मरम बताऊँ ॥
जीव दुखारी तीन ताप से, सुख का भेद लखाऊँ ।
सुमिरन ध्यान भजन की किरिया, जानूँ जान बताऊँ ॥
विनती सुनो दयानिधि मेरी, आऊँ कहूं न जाऊँ ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रेम प्रीति उमगाऊँ ॥

आसा एक गुरु की चित में, और न मन अभिलाषा ।
जिसका ऐसी सच्ची श्रद्धा, हुये न कभीं निराशा ॥
काम न आवे छल चतुराई, यह सब भरम विकारा ।
एक गुरु के नाम की चिन्ता, कर जग से हो न्यारा ॥
जाके सिर पर हाथ गुरु का, बाँका बाल न होई ।
जो जग बैर करे बहुतेरा, हानि न तासे कोई ।
मौज में बरतूँ मौज निहारूँ, मौज का धरूँ सहारा ।
मौज की राह में पग को धारूँ, मौज से होय सुधारा ।,
कष्ट कलेश विपत दुख आपति, पड़े सीस पर सहना ।
राधास्वामी मौज परवाना, मौज की ओट में रहना ॥

धन्यवाद

श्री कृष्ण तिवारी स्टाम्प वैंडोर पो० रमडा ने अपने पु पदम नाथ तिवारी की शादी के शुभ अवसर पर पर मनुष्य बनो की सहायतार्थ ५०) अनुदान स्वरूप भेजे हैं । मालिक से प्रार्थना है कि वह इस युगल जोड़े चि० आयु प्रदान करते हुये सुख वैभव से परिपूर्ण रक्खे ।

प्रकाशक

श्रीमती मुन्नी देवी नागौर (राज०) ने सतसंगी बहनों को तरफ से ११) मनुष्य बनो की सहायतार्थ भेजे हैं । पत्रिका इसके लिये इन सभी बहिनों की आभारी है ।

—०००—

सत्संग

उज्जैन कुम्भ ६-५-६८ (संस्कार)

मैंने कल बताया था कि हर एक आदमी जो काम करता है उसका कोई मिशन (उद्देश्य) होता है। किसी गरज को लेकर काम करता है। आज मैं घूमने के लिये बाहर गया। वहां अनेक धर्मों के पड़ाल लगे हुये थे। ख्याल आया, फकीरचन्द ! तेरे जिम्मे गुरु ने ड्यूटी लगाई थी जगत कल्याण की, निबल अबल अज्ञानी जीवों के हिते के लिये। यहाँ अनेक विचारधारायें हैं, अनेक धर्म हैं, अनेक सम्प्रदाय है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तू क्या है ! पिददी न पिददी का शोरुआ ! क्या कर सकता है तू ?

इसका एक इलाज है। वह यह कि मनुष्य वह है जो अपना कर्म पूरा कर जाता है। अपनी ड्यूटी पूरी कर जाता हैं। इसका परिणाम क्या होगा मुझे पता नहीं। मैं ब्राहमण हूँ हिन्दू हूँ। सनातन धर्म में एक गाथा है पौराणिक कथाओं में। हमको एक सबक (शिक्षा) देती है। दो पक्षी थे। उनके अण्डे समुद्र बहा ले जाया करता था। वह जब अण्ड़े दें, तभो समुद्र की लहर आये और उनको बहा ले जाय। उनकों बड़ा क्रोध आया उन्होंने कहा, समुद्र को सुखा देंगे। अब वह चोंच भर-भरकर पानी फेंकने लगे। उसके साथी आये। कहा क्या करते हो ? उन्होंने कहा सनुद्र को सुखा देंगे। साथियों ने कहा होश की दवा करो ! उन्होंने कहा साथ नहीं देते तो जाओ। जाति अभिमान बड़ा होता है। पक्षियों को भी जाति अभिमान आ गया। करोड़ों पक्षी इकटठे होकर चोंच भर-भरकर पानी फेंकने लगे। संयोग से नारद ऋषि आ गये। नारद जी कहते हैं, क्या करते

हो ? उन्होंने कहा, समुद्र सुखाते हैं । नारद ने कहा, बुद्धि कहाँ है तुम्हारी । उन्होंने कहा, अपना रास्ता लो । हम जो करते हैं करेंगे, या मर जायेंगे । नारद जी बैकुन्ठ में गये । वहां गरुड़ था । उसने गरुड़ को ताना मारा । तुम्हारा कुल सब का सब मूर्ख है । उसने पूछा क्यों ? उसने कुल घटना कह सुनाई । गरुड़ ने जाकर विष्णु भगवान से कहा । खैर ! विष्णु भगवान ने चक्र छोड़ा । उनकी किसी प्रकार सन्धि हो गई । समुद्र पर सीमा बाँध दी गई ।

मेरे दिल में जिस समय मैंने इन्सान बनो' का १९४७ में झन्डा उठाया था, उस समय मेरे सामने यही गाथा आई । अब मैं सोचता हूँ जगत कल्याण कब कैसे हो सकता है ? जगत का कल्याण सनातन धर्म कर सकता है । सनातन धर्म क्या है ? मैंने कल बताया था कि जो आदि मनु का धर्म है, वही सिद्धान्त सनातन धर्म का है । आदि मनु को उस कर्ता पुरुष ने अथवा सोहं पुरुष ने अपने संकल्प से या अपनी वासना से बनाया था । कर्म का सिलसिला चल निकला । यदि मनुष्य इस संकल्प को ग्रहण करले, उसका कल्याण हो सकता है । चाहे करोडों मजहब हो, कोई हानि नहीं ।

केवल सवाल यह है कि हर एक मजहब की, हर एक पथ की, हर एक पार्टी की नीयत क्या है । उनकी वासना क्या है ।

वासना से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उत्पन्न हुये । यह देवता जितने हैं हमारे, यह सब दिव्य शक्तियाँ है । मैं यहाँ कुम्भ पर आया हूं । यह कुम्भ का स्थान है ! यहाँ कहते हैं समुद्र मथा गया था जो अमृत का कुम्भ (घड़ा) निकला, उसके टुकडे यहाँ पर पड़े हैं । मैं इस युग का आदमी हूं । मैं पूछता हूँ अपनी आत्मा से कि क्या समुद्र मथा गया था । अथवा यह गप

है ? मैं कहता हूँ मथा गया था मगर इस भेद को दुनियाँ नहीं जानती । इसका पता वह लगा सकता है जिसको ज्ञान है । वह जो मथा गया वह देवताओं और असुरों ने मथा । देवता और असुर प्रजापति के पुत्र कहलाते है । असुर बड़े हैं और देवता छोटे हैं । बड़े भाई असुर है । देवता छोटे भाई ! यह दुनियाँ ज्योतिस्वरूप (Energy) से पैदा होती है । वह एक प्रकार का प्रकाश है, किरण है । किरण के अन्दर से ही पहली वस्तु बाहर निकलती है, वह देवता हैं । जैसे दीपक को जलाओ, जो धुआँ बनता है वह असुर है । वह जगह घेरता है । जो उसके पीछे प्रकाश रहता है वह देवता है । हमारे शरीर के अन्दर हर समय मंथन होता रहता है । जब समुद्र मंथन किया गया वह सूक्ष्म रचना में मंथन हुआ । योग वशिष्ट में लिखा है कि ब्रह्मा का देह नहीं है उसका देह सकल्प है मायावी है । संकल्प का बना हुआ है । तो संकल्प के जगत में ऊपर भी रचना होती रहती है आरम्भ में मैंने कल कहा था कि लोग मुझको अपने संकल्प से बनाकर मुझ से काम लेते हैं। इस एक बात ने मुझको ज्ञान दे दिया और कुदरत के रहस्य का मुझको ज्ञान हो गया ।

टप्पल (जिला अलीगढ़ उ०प्र०) में यादराम एक हेड मास्टर हैं । उसने २६ जून या जुलाई शायद १९२५ को किसी समय जमुना की रेती में देखा, कबीर पंथी साधु साथ था । उन्होंने मुझसे पूछा कि आपका कोई प्रोग्राम 'मनुष्य बनो' (पत्रिका) में नहीं है । आप कैसे आये ? आपने कहा कि जहाँ मुझे कोई याद करता है. मैं वहाँ आ जाता हूं । फिर ? आपने कहा कि घर वापिस चले जाओ । मैं सच्चा आदमी हूं । मैं कहता हूं कि मैं वहाँ नहीं गया । फिर कौन गया ? मैं नहीं जानता हूं कि कौन जाता है । मझे इसका ज्ञान है । जब उसने मुझसे यह हाल कहा

तो मैंने कहा सब कहना झूंठ न बोलना उसने शपथ खाई। मैंने कहा कि तुम मुझे पूरा हाल बताओ। उसने कहा कि हम रात को सत्संग करके ८ बजे घर जाया करते थे। उस दिन १० बजे गये। स्त्री ने मुझसे क्रोध में कुछ कहा। प्रातः ५ बजे मैं उठकर बाहर चला गया। मैं फिर घर नहीं गया। मैंने कहा जब तुम घर वापिस गये तो तुम्हारी स्त्री क्या करती थी? उसने कहा कि आपकी फोटो के सामने वे होश पड़ी हुई थी। उसकी प्रबल इच्छा! चूंकि वह मेरे रूप में विश्वास रखती थी, इसलिये उसकी अपनी स्त्री के संकल्प ने मुझको बनाया और उससे काम ले लिया। यदि यह भेद या रहस्य जिसको मैंने खोला है, संसार के लोगों के अन्तर आ जाय कि यह सब मनुष्य के अपने मन का खेल है, तो जिसका जी चाहे वो राम को पूजे कृष्ण को पूजे, देवी को पूजे, झगड़ा समाप्त हो जाय। हमारा द्वेष समाप्त हो जाय। इस समय जो द्वेष भाव है व इतने पंथ और सम्प्रदाय हैं वह इसी कारण हैं कि संसार में अज्ञान है। मैंने आप लोगों को क्या कहा है? अच्छे-अच्छे महापुरुष बैठे हुये हैं। मातायें हैं। मैंने इस ख्याल को लेकर साहस किया है कि मैं इस रहस्य को बता जाऊँगा। यह रहस्य मैंने नहीं बताया। यह राज या रहस्य राधास्वामी दयाल ने बताया। यह रहस्य कबीर ने बताया। उपनिषदों के ऋषि इसको छाया पुरुष कहते हैं। सनातन धर्म में छाया पुरुष कहते हैं। चूंकि जीव इतनी उच्च-कोटि की समझ नहीं रखते, उनको इस रहस्य का ज्ञान नहीं और हम महन्त, पण्डित या गदिदयाँ वाले जो हैं, अपने झूंठ मान को स्थिर रखने के लिये, अपनी दौलत के लिये, अपने पैसे के लिये, इस बात को पर्दे में रखते हैं। जीव विचारे अज्ञान में फँसकर अन्धकार में पड़े हुये हैं। सोचा मेरी बात का! कहा

स्वामी जी ने भी यही । शास्त्रों ने भी यही कहा, संत कबीर ने भी यही कहा सैन बैन में (संकेतों में) ।

कबीर की वाणी है—

धर्मदास तोहि लाख दुहाई । सार भेद बाहर नहिं जाई ।।

राधास्वामी कहते हैं—

सत बिना कोई भेद न जाने, वह तोहि कहें अलग में ।

चूंकि मेरे जिम्मे डयूटी है, मैंने इस ख्याल को लेकर इस राज या भेद को खोला कि जो समझ बूझ वाले आदमी हैं, वह लुट न जाये । अब जिसने मेरा रूप जमुना की रेती के बीच में देखा उसको यदि अज्ञान में रक्खा जाय तो वह मुझे धन देगा मेरी पूजा करेगा । करेगा कि नहीं ?

तो तुम्हारा जो शरीर है इसके अन्तर में इसका भी मंथन होता है । जब हम साधन करते हैं, हमारा मंथन होता है । वहाँ समुद्र का मंथन हुआ । पहिले क्या निकला ? विष । विष को शिवजी ने पिया । हमारे हिन्दू शास्त्र कहते है कि हमारे शरीर में सम्पूर्ण देवता रहते हैं । गणेश गुदा में, ब्रहमा इन्द्रिय (लिंग इन्द्रिय) में, विष्णु नाभि में, शिवजी हृदय में मौजूद हैं । आज एक आदमी ने मुझसे सवाल किया कि मनुष्य दर्जा देवता से क्यों बड़ा है ? इसलिये बड़ा है कि देवता इस शरीर में है, हमारे मन में हैं । हमारी आज्ञा में हैं । ऊपर के लोकों के जो देवता हैं वह हमारे मन के अन्दर हैं । जो ब्रहमा और पारब्रहमा हैं यह हमारी आत्मा में रहते है । मनुष्य जो है वह देह मन और आत्मा से परे रहने वाला है ।

तो सनातन धर्म क्या है ? यह जगत संकल्प का है । जो व्यक्ति हमेशा के लिये इस काल के चक्र से निकलना चाहता है, उससे निकलने को आगे चलकर सत्संग में बताऊंगा । काल का चक्र क्या है ? रचना का होना, उत्पत्ति का होना, और प्रलय

का होना। यह काल का चक्र है। सृष्टि को उत्पत्ति और प्रलय से जो परे है, वह सन्तों का वास है। कबीर हुये, स्वामी जी (राधास्वामी) हुये, या उपनिषदों के ऋषि हुये, वहाँ उनका वास था। इसलिये मनुष्य का दर्जा बड़ा है। अब इससे बाहर निकलने के लिये आगे सत्संगों में वर्णन करूंगा। तुमको इससे बाहर निकलने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। यह माया का देश है अर्थात वासना रूपी जो माया है इसका देश है। उसमें कैसे रहना है, मैं यह बताना चाहता हूं।

हम गृहस्थी हैं हम दुखी रहते हैं। इसलिये मैं कहता हूं कि हमारा एक मात्र इलाज सनातन धर्म है। सनातन धर्म क्या है ? मैंने कल कहा था—"शिवसंकल्पमस्तु'। जिस प्रकार के संकल्प तुम्हारे हैं वैसी ही संतान तुम्हारी होगी। वैसे ही तुम बनागे। हम सबको अपनी सन्तान से शिकायत है।

बाहर मियाँ पंच हजारी। अन्कर बीवी कर्मा दीं मारी ॥

हर एक आदमी को कोई न कोई दुख है। यह दुख क्यों है ? क्योंकि हम सनातन धर्म को भूल गये। सनातन धर्म क्या है ? आदि का धर्म। अपने संकल्प को ठीक रखना।

यह संकल्प का जगत है। माया का देश है। तुम मातायें आई हो। मैं आपको लैक्चर नहीं देता। वेद नहीं पढ़ाता। रामायण नहीं पढाता, कबीर या राधास्वामी की वाणी नहीं पढ़ाता, मैं आपको जीने का राज या रहस्य बताता हूं कि तुमने जीवन कैसे गुजारना है ताकि तुमको सत्संग में आने का कुछ लाभ हो।

जब अभिमन्यु माँ के पेट में था, अर्जुन ने अपनी स्त्री से चक्रब्यूह बेदने का वर्णन किया। उसकासंस्कार अभिमन्यु ने लिया। जब अभिमन्यु युवा हुआ, उस संस्कार ने —

चक्रव्यूह को नेध सका । अब तुम सोचो । तुम कहते हो कि हमारी लड़कियाँ बिगड़ गई । हमारी सन्तान बिगड़ गई । क्यों न बिगडें ! जब बच्चा पेट में होता है, स्त्री पुरुष विषय भोग करते रहते हैं । ज अभिमन्यु चक्रव्यूह बेधने के ज्ञान का माँ के पेट में रहता हुआ सस्कार ले सकता है तो हमारे बच्चे, जब हम स्त्री पुरुष बच्चा पेट में होते हुये भोग करते हैं क्या वह काम भोग के अंग को नहीं लेंगे ? क्या तुम्हारे गन्दे विचारों के संस्कार को नहीं लेंगे ? अतः जो तुमने किया है वह भोगो । यहाँ हमारी सहायता सिवाय सनातन धर्म के और कोई नहीं कर सकता । सनातन धर्म तुमको बताता है कि जीवन कैसे गुजारो ।

इस समय दुनियाँ के अन्दर नया पोत जो हमारा बच्चों का है यह अनुशासन (discipline) से बाहर है । क्यों न हो ? हम जितनी सन्तान पैदा करते है यह बिना बुलाये हुये महमान हैं । हम सन्तान के लिये भोग नहीं करते । तो यह बच्चे बिना बुलाये महमान Uncalled for children हैं । उनसे तुम कैसी आशा कर सकते हो ? मैं अपना मुंह काला करके तुमको सबक (सीख) देना चाहता हूं । मेरे एक लड़की है । वह एक अच्छे भले और बड़े अफसर की स्त्री है । वह माँ का कहना नहीं माना करती थी । जब कभी कोई शब्द माँ ने कहा और वह बिगड़ी । इसके अतिरिक्त कोई शिकायत मुझे उसको और से नहीं आई । कई बार मेरी स्त्री ने कहा कि तुम लोगों को मति देते हो इसको भी दिया करो । मैं उसको कहा करता कि इसको मति दूं ! बात क्या थी ? मेरे सन्तान थी । मैं काम के वश हुआ । बच्चा पेट में आ गया । मेरी स्त्री नहीं चाहती थी कि बच्चा हो । मुझे याद है उसने मुझसे कहा भी कि पीपल की

जड़ लाओ । अब जब जिस आने वाले बच्चे को माँ ही नहीं चाहती वह उसका कहना कैसे मानेगा ! सोचो बेटियो ! मैं तुमको अपने जीवन का कच्चा चिठठा सुना रहा हूँ ताकि तुमको होश आ जाये । राम राम जपने से तुम्हारा दुनियाँ का व्यवहार सुखदायक नहीं हो सकता । मन्दिर में जाके घन्टी बजाने में तुम्हारा व्यवहार सुख दायक नही होगा । तुम्हारा व्यवहार तुम्हारे मन वचन और कर्म के शुद्ध रखने से सुखदायक होगा ।

मैं अपने उदाहरण देता हूं ओर उनको तुम अपने घरों में आप अजमा देखो ! माताओं की जैसी इच्छा होती है वैसी ही सन्तान बनती है । दुनियां को बनाने वाले (सुधार करने वाले) यह लीडर नहीं हैं । यदि यह लीडर दुनियाँ का सुधार कर सकते होते तो नेहरू या शास्त्री या बड़े बड़े आदमी देश का सुधार कर देते । यह नहीं कर सके । इसका सुधार करने वाली तुम हो । तुम हो तुम ! ऐ माताओ ! बहिनो ! बेटियो ! तुम हो संसार का कल्याण करने वाली ! आदि गुरु माता है ।

यह अनुभव की बातें है । लोग बाहर के उदाहरण देते हैं । सिगाही का लड़का हूं । मेरा पिता रेलवे पुलिस में कॉस्टेबिल था । मेरा जन्म मेरी माता की शादी के १४ वर्ष बाद हुआ मेरी मां मुझसे कहा करती थी—बच्चा ! मैं स्टेशन पर हाती, स्टेशन मास्टरों को देखती लाल और हरी झण्डियां लिये हुये । गाड़ी में डी० टी० एस० आता, टी० आई० आता तो कहा करती थी—बच्चा मैं भी भगवान के आगे मत्था टेका करती कि मेरे भी बच्चा हो वह झन्डियां लेकर फिरे, गाड़ी में सफर करे । उसका फल यह निकला कि मैं स्टेशन मास्टर हुआ और मेरे छोटे भाई राय साहब ट्रैफिक मैनेजर हुये ।

मैं तुम लोगों का सत्संग कराना चाहता हूं । इसमें हिन्दू

का कोई सवाल नहीं। मुसलमान का कोई सवाल नहीं। यह तुम्हारे जीवन की गढ़त है। यह शिक्षा कौन देता हैं तुमको ? सनातन धर्म देता है। सनातन धर्म के ग्रन्थों को पढ़कर देखो। जब से सनातन धर्मियों ने अपना सनातन धर्म छोड़ दिया, देश बरबाद हो गया। अच्छी सन्तान पैदा नहो होती। संस्कार ठीक नहीं है। हमारे ऋषि मूर्ख नहीं थे जो जाति, गोत्र और वर्णन को देखते थे। गुण, कर्म, और स्वभाव को और लड़के लड़-कियों के सम्बन्ध करने में देखते थे। आजकल तो पैसा गुण, कर्म स्वभाव रह गया। कुल कोई नहीं देखता। पिछले समय में कुल देखते थे। इसकी मां कैसी थी ! इसका बाप कैसा था ! इसका दादा कैसा था !

जब बच्चा पैदा हो जाता, उसको नाम करण संस्कार देते थे। जैसी जिसकी प्रकृति होती, गुरु लोग वैसा नाम देते थे। क्षत्रियों के घर का बच्चा और तरह के संस्कार लेगा। जो गुरु लोग थे वह जानते थे कि इसके कुटुम्ब की प्रकृति कैसी है। उसी के अनुसार उसको संस्कार देते थे। इसको कहते हैं दीक्षा, नामदान, ख्याल देना। मैं अपना उदाहरण देता हूं। मैं कौन हूं। यह जो कुछ मैं काम करता हूं मुझे पैबन्द लगाई हुई है। मेरे गुरु ने संस्कार दिया हुआ है। क्या संस्कार दिया था ? जब सन १९०५ ई० में मैं तो उनके पास गया था अपने दुखों का मारा हुआ, वह कहते हैं—फकीर ! तू फकीरों (सन्तों) में चाँद बनेगा। आज मैं फकीर शब्द को समझाता हूं। वह जो उन्होंने मुझे यह शब्द कहे थे वह पैबन्द लगाया गया था। इसको कहते है नाम संस्कार, आज कल तो नाम संस्कार रस्म रह गई दो पण्डित बुलालिये, पण्डित ने दो मंत्र पढ़ दिये, नाम संस्कार हो गया। मेरे छोटे भाई राय साहब सुरेन्द्र नाथ को दाता के दरबार में ले गया। पूछने लगे तेरा क्या नाम है ? इसने कहा

महाराज ! मेरा नाम ढेरूमल है । कहा क्या भददा नाम रक्खा है ? मैंने कहा महाराज बदल दें । दूसरे दिन उसका नाम बदला । कहा तेरा नाम सुरेन्द्रनाथ है । तू देवताओं का नाथ और राजा है । मुझे कहने लगे कुर्सी पर बिठा दो । उसने मैट्रिक पास नहीं किया । राय सहाब का हिसाब खिताब लिया । ढाई हजार रुपये मासिक वेतन लेकर के रिटायर हुआ । अब वह सन्यासी हो गया । इसको कहते है संस्कार देना ।

सनातन धर्म किसी मजहब का नाम नहीं ! कोई सम्प्रदाय नहीं । यह सबकी सम्पति है । हर एक मनुष्य दुनियां में पैदा होता है मगर वह इस पुरानी संस्कृति को धारण नहीं करता । पुरानी संस्कृति क्या है ? पुरानी संस्कृति 'शिवसंकल्पमस्तु' । आजकल के युवक पुरानी संस्कृति बोलते हैं । (मगर धारण नहीं करते) ।

मैंने आपको कहा कि मैं आपको यह लैक्चर नहीं देता जो पुस्तकों में लिखे हुऐ हैं । मैं वह बात बताता हूँ जिससे तुम्हारा जीवन सुख से व्यतीय हो । यदि तुम्हारे पल्ले कुछ नहीं पड़ता, तुम्हें कुछ समझ ही नहीं आती, तुम्हें जीवन गुजारने का रास्ता ही नहीं मिलता, तो धिक्कार है तुमको जो सत्संग में आते हो और धिक्कार है मुझको जो मैं तुमको सत्संग कराता हूँ । क्या लाभ है सत्संग का ! मैं ब्राहमण हूँ । जो ज्ञान मैं देता हूँ उस को बेचता नहीं । 'वेद' नाम है ज्ञान का । जो सार वस्तु का ज्ञान बताता हूँ अपना मुँह काला करके अपना अनुभव बताता हूँ । इसके बदले में मैं कुछ माँगता नहीं । दान नहीं लेता । जब दशरथ का प्राणान्त हो गया तो भरत कौशल्या के सामने शपथ खाता है कि मुझको अमुख पाप लगे यदि मेरा कोई हाथ राम के बनवास में हो । एक शपथ यह खाता है कि जो पाप ब्राह्मण

को वेद बेचने में लगता है वह मुझे लगे यदि इसमें कोई हाथ यदि मेरा हो। आज कल के ब्राहमण क्या हैं ? घर-घर रोटी माँगते फिरते है। ब्राहमण हुये या साधु हुये। यह सोटा हाथ में लेकर तुम गृहस्थों के घर से टुकड़ा माँगते हैं। कौन कहता है कि यह ब्राह्मण है ? ब्राह्मण वह है जो में रमंण करता है। किसी ब्राहमण को भिक्षा माँगते हुये नहीं देखोगे। ब्राहमण में इतनी शक्ति होती हैं कि उसकी मनोशक्ति दूसरों को अपने पास खेंच लाती है।और दूसरे उसकी सेवा करते हैं। यही है हमारी पुरानी संस्कृति।

मैंने आरम्भ किया था कि सनातन धर्म क्या हैं ? सनातन धर्म है वासना अनुकूल करना, क्योंकि कुल रचना वासना से होती है। जितना सृष्टि का तुम्हारा कर्म है और जब से संसार बना है सब जगह वासना हो।है वासना या इच्छा का नाम ही माया है। यह मनोमय जगत है, माया मय जगत है, ब्रह्ममय जगत है संकल्प मय जगत है। इस दुनियाँ में संकल्प के सिबाय दूसरी वस्तु काम नहीं करती, इसलिये आप लोग हो मातायें आई हैं। जो बीत गया बीत गया। जो नवयुवक हैं उनसे हिदायत करता हूँ कि अच्छी सन्तान पैदा करो। तुम्हारा भविष्य तुम्हारी सन्तान पर है। देखो अब गवर्नमेंट ने कितना प्रबन्ध किया है ! बहुत उपज देने वाली फसलों को तैयार किया है। अधिक दूध देने वाली गौ की नस्ल का प्रबन्ध किया है। जिस जमीन में दस मन दाने निकलते थे, अब पचास मन दाने निकलते हैं परुन्तु क्या कभी गवर्नमेंट ने या मानव जाति ने सोचा है कि हमारी सन्तान कैसे अच्छी हो ? किसी का ध्यान इस ओर गया ? नहीं गया। चूंकि मेरे जिम्मे डयूटी है, इसलिये मैं अपना कर्त्तव्य निभा जाना चाहता हूँ। तुम्हारा जो चाहे मेरी बात सुनो, जी चाहे न सुनो। गुरु की आज्ञा है, जो मेरी समझ में आता है, अपनी नीयत से सच्चा होकर कहे जाता हूँ।

सबसे पहले किस चीज की आवश्यकता है ? यही कि आचरणों को ठीक करो।

मैं तुमको एक बात कहता हूं। किसी और का उदाहरण दूँ तो तुमको बुरा लगेगा। मैं अपना मुँह काला कर सकता हूं। हमारे बच्चे जो कुछ हैं, वह हम है (अर्थात बच्चों में हमारे ही संस्कार होते हैं।) जब मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता था मैंने चोरी की। किसकी ? एक हवलदार का लड़का था। उसकी कलम चुरा लाता। उसकी पेन्सिल चुरा लाता। उसकी कापी चुरा लाता। उसने अपने बाप से कहा अब मैं सोचता हूँ कि मैंने चोरी क्यों की ? इसलिये की मेरी माँ चोर थी। तुम पूछोगे कि मां कैसे चोर थी ? वह चोरी नहीं गिनी जाती मगर मैं उसको चोरी गिनता हूं। मेरे बाप पुलिस में थे। गरीब थे। वहाँ तनख्वाह के अतिरिक्त पार्सलों के पैसा दो पैसा नगद मिल जाता था पुलिस वालों को। मेरा पिता जेब में ले आया करता था। मेरी मां कहा करती थी कि बच्चा मैं तेरे बाप की जेब से उन पैसों को इकठठा करती थी। मैं अपने माँ बाप की बदनामी करके तुम लोगों को उपदेश देना चाहता हूं। यदि तुम में गैरत का माददा है और तुम लोग केवल सत्संग के लिये आये हो तो जीवन बदल सकता है। जब मेरे पिता को रोग हुआ, लोथडे निकले जो छूत का रोग होता है तो उनको अस्पताल में ले चले। बोल नहीं सकते थे। मेरी माँ कहती है कि बच्चा तेरे बाप ने माथे पर हाथ लगाया और ऐसे इशारा किया कि पैसा नहीं हैं। मैंने ८०) रु० जमा किये हुये थे वह उनकी कमर के साथ बाँध दिये। सांसारिक दृष्टिकोण से यह चोरी नहीं है। स्त्रो के ख्याल से उसे चोरी नहीं गिना जाता मगर वह चोरी है। मैं अभी पैदा नही हुआ था। मैं उसके पेट में था। उसका प्रभाव

मुझ पर पड़ा कि मैंने तीसरी कक्षा में एक स्कूल के लड़के की हँसी में ही चोरी की। मुझे क्या पता था कि यह चोरी होती है कि नहीं होती। बच्चा तो था ही ! इसी तरह तुमको कहता हूं कि यदि संतान को ठीक बनाना चाहते हो अथवा तुम चाहते हो भारतवर्ष बचे, तो तुम लोग अपने क्रियात्मक (अमीरी) जीवन की शिक्षा का सबूत दो। स्त्री और पुरुष नित्यप्रति आपस में लड़ते रहते हैं। तुम्हारी सन्तान तुमको देखती है। वह बच्चे भी अपने घरों में अवश्य लड़ेंगे। क्या कहीं कोई ऐसा प्रबन्ध हुकूमत के पास है जो यह शिक्षा दें ? इसी तरह से जो स्त्री हैं पुरुषों से हेराफेरी रखतीं हैं, उन औरतों को सन्तान से शिकायत रहती है और उनकी सन्तान की अपने माँ बाप से नहीं बनती।

मैं यह नहीं कहता कि राम का नाम न लो। मैं यह नहीं कहता कि मूर्ति पूजा बुरी है। मैं कहता हूं कि तुम्हारा बेड़ा पार तुम्हारे आचरण ने करना है। घण्टी बजाने ने नहीं करना मुंह से राम राम कहने, भजन गाने ने नहीं करना। हाँ थोड़ा सा लाभ अवश्य होगा। तुमको सच्ची बात साफ-साफ कहता हूं जिससे कि तुम्हारा भला हो सके। मैंने तुमको सिद्ध कर दिया कि जिस अर्जुन ने कृष्ण के मुंह गीता सुनी, यदि भागवत के लिखने वाला सच्चा है यद्यपि मुझे पता नहीं मगर वह लिख गया कि वह अर्जुन कृष्ण के मुंह से गीता सुनने पर भी नर्क में गया। फिर तुम्हारा क्या हाल होगा ? इसलिये तुमको क्या करना है ? अपने मन पर सवारी करनी है (अर्थात मन को वश में करना है।) यह मन महा चंचल है। इसको वश में करना कोई सुगम बात नहीं है। जितने धर्म हैं, जितने पन्थ हैं, जितने साम्प्रदाय हैं, यह सब के सब किसी न किसी विधि से

तुमको इस मन पर सवारी करने का उपाय बताये हैं। कोई धर्म सम्प्रदाय गलत नहीं मगर जो पैबन्द तुमको तुम्हारे गुरु, तुम्हारे पण्डित , मौलवी मुल्ला लगाते हैं, जो मन्त्र तुमको देते हैं, जो उपाय बताते है, क्या उनके मन अपने वश में हुये हैं ? यदि स्वयं उनका मन वश में नहीं हुआ, वह लाख तुमको नाम दान दे जाँय, लाख तुम को उपदेश दे जांय, लाख तुमको व्या-ख्यान दे जाँय तुम्हारे पर कोई प्रभाव नहीं होगा क्योंकि संस्कार देने वाला स्वय अमल करने वाला नहीं है। यह मन महा चंचल है। इसको वश में करना महा कठिन हैं कबीर इस मन के विषय पर कहते है :—

साधो यह मन है बड़ा जालिम।
जाको मन से काम पड़ो है, तिस ही होय है मालुम।
मन कारन जो उसकी छाया, तिहि छाया में अटके ॥
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके ॥

अब तुम इस मन के अत्याचार का परिणाम देखो। भारत वर्ष की क्या दशा है जिसके अन्तर राम का रूप प्रकट हुआ है, है तो उसका अपना मन मगर उसने समझा कि यह राम और है जो बाहर से आया है। वह रामा पन्थी बन गया। जिसके अन्तर में कृष्ण का रूप प्रगट हुआ, है तो उसका अपना मन हैं मगर उसने समझा यह कृष्ण और हैं जो बाहर से आया है। वह कृष्णा पन्थी बन गया। इसी तरह जिसके अन्तर बाबा नानक प्रगट हो गया या कबीर प्रगट होगया, है वह है तो उसका मन, मगर उसने समझा कि यह बाहर का बाबा नानक या कबीर है और वह नानक पन्थी या कबीर पन्थी बन गया। इस तरह भारतवर्ष की मानव जाति इस अज्ञान के कारण बँट गई। मैं तुमको कितनी सच्ची बात कहता हूँ कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता।

मैं सिरसाहेड़ी गया। वहाँ ब्राह्मणों की १०० घर की बस्ती है। जब मैं वहाँ गया एक स्त्री मेरे पास आई। उसने एक बच्चा मेरी गोद में रख दिया। मैंने कहा माई तू कौन है ? उसने कहा मैं अमुख की पुत्र बधू हूं। मेरा ससुर आपके सत्संग में जाया करता था। यह बच्चा आपकी दात है। मैंने कहा वह कैसे ? उसने कहा १८ वष से मेरे संतान नहीं थी। मेरे सास ससुर बातें करते थे कि इस लड़के की दूसरी शादी कर दो। मैंने सुन लिया। मैं अपने घर में आई, रोने लगी। आपको याद किया। मेरे घर में प्रकाश हुआ। उसमें मैं प्रगट हुआ। मेरे हाथ में बच्चा था। उसको प्रकाश का बच्चा दिया। फिर समय पर उसके बच्चा हो गया। ऐ भारत के धार्मिक जगत के लोगो ! मैं संसार में गुरु की हैसियत में प्रगट हुआ हूँ। गुरु नाम है ज्ञान का। सच्चा ज्ञान दिये जाता हूं। मैं झूठ नहीं बोलता। मैं उस माई के अन्दर नहीं गया। यह उसका मन था।

राधास्वामी दयाल की वाणी है—'जगत सब धोखे धार वहा और भी ऐसी बाणीं हैं। मैं सन्तों का यों ही अनुयायी नहीं हुआ। मैं कभी भी कबीर के आगे या स्वामी जी के आगे अथवा इन सन्तों के आगे सिर न नवाता, यदि मुझको इसमें सत्यता प्रतीत न होती। यह जितना खेल है सब मनुष्य के मन का है। बड़े बड़े लाग भटक गये। इस भटकने के कारण हमारा जीवन आशान्त हो गया। जैसे कि कहा है—

मन कारण जो इसकी छाया, तिहि छाया में अटके।
निरगुन सरगुन मन को बाजी, खरे सयाने भटके ॥

बड़े-बड़े भटक गये। तुम्हारे अन्दर जो रूप रेखा बनाने वाला तुम्हारा मन हैं, यह मन कहाँ से बना ? तुम्हारी वासना

आदि माया कीन्हा चतुराई । झूंठी माया सांच दिखाई ॥

यह शास्त्र कहते हैं कि ब्रह्म से माया की उत्पति होती है । उसने सृष्टि को रचा और सारा संसार भ्रम में आया हुआ है । सब चक्कर काट रहे हैं ।

मन हो चौदह लोक बनाया, पांच तत्व गुन कीन्हे ।
तीन लोक जोवन बस कीन्हे, परे न काहू चीन्हे ॥

किसी को समझ नहीं आती कि मन है क्या ? बुरी मार मारता है ! रोगियों को इसने मारा, भक्तों को इसने मारा, ज्ञानियों को इसने मारा, ध्यानियों को इसने मारा । अफ्रीका में, अमरीका में लोगों में मेरा रूप प्रगट होता है । मैं सच कहता हूं उन लोगो के अन्दर मैं नही जाता । हजारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं, उनके अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है, दवायें बताता है, मगर मुझे पता नहीं होता ।

कौन आता है ? ऐ मानव ! यह तेरा अपना ही मन है । तू उसके चक्र में आया हुआ है । यदि तू इस बुनियां में रहता है तो अपने मन को वश में कर ले क्योंकि तेरी जो दुनियां बनेगा तेरे ख्याल कीं दुनियाँ बनेगी । तुम्हारी आस की दुनियां बनेगी । यही सन्त कहते हैं । यही सनातन धर्म कहता है । मन को वश में करो । मन छलांग मारता है ।

इसको वश में करने का इलाज यह है कि मन को एक ओर से हटाकर दूसरी और लगाओ, जो शुभ संकल्प अथवा शुभ कर्म करने वाला हो । बुराई की ओर से सच्चाई की ओर लगाओ । यह तुम्हारी इच्छा पर है कि तुम अपने विचार को राम नाम से बदलो, कृष्ण नाम से बदलो, वाह गुरु के नाम से बदलो अल्लाह नाम से बदलो अथवा राधास्वामी नाम से या पाँच

एक ओर करो, बशर्ते तुम्हारा मन ऊट-पटाँग या गलत हर समय न सोचता रहे। तरह-तरह के विचारों में हर समय तुम्हारा मन डूबा रहे। तुमको हर एक सम्प्रदाय वाले ने अपना अपना सुमिरन ध्यान बताया है तो बुराई नहीं है। बुराई क्या है? ख्याल है। अच्छाई क्या है? ख्याल है विचार। अपने विचार को बदलो। मैं राधास्वामी मत का हूं। मैं इससे बिल्कुल इन्कार नहीं करता मगर यह नहीं कहता कि तुम अवश्य मेरे ही मत के हो जाओ। मगर याद रक्खो जो गुरु, जो महात्मा तुम को नाम देता है, तुम्हारे मन को बदलने का उपाय बताता है, तो देखना यह है कि अपना उसका मन बदला हुआ है या नहीं! यदि उसका मन स्वयं बदला हुआ नहीं है वह तुमको लाख उपदेश करे तुमको कोई लाभ नहीं होगा।

आपने सुना होगा कि कोई माई बच्चे को लेकर किसी महात्मा के पास गई। कहा महाराज! यह गुड़ बहुत खाता है। उसने कहा दो हफ्ते बाद आना। वह दो हफ्ते बाद गई। उसने कहा बच्चा! गुड़ न खाना। उसने कहा अच्छा महाराज! माई ने पूछा महाराज! यह उसी दिन क्यों नहीं कह दिया? उसने कहा कि मैं उस समय आप गुड़ खाता था। मान लो कि मैं महात्मा बन गया। यदि मेरी यह नीयत हो कि मैं जाऊँगा उज्जैन में, यहाँ पंडाल बनबाऊँगा वहाँ मेरे चेले आ जा जायेंगे, हजार दो हजार रुपया इकठठा करके मैं ले आऊँगा मानवता मन्दिर के लिये और मैं तुम लोगों को उपदेश करता हूं तो मेरे उपदेश के अन्दर क्या चीज जायेगी? जो कुछ मेरे अन्तर में है वह तुम्हारे अन्तर जायेगा। सन्तान पैदा करना और चेले बनाना एक ही बात है। याद रखना। शास्त्र कहते हैं कि प्रजा के पापों का बोझ राजा पर जाता है। संतान के पापों का बोझ माँ

बाप पर जाता है। चेलों के अज्ञान या दुष्कर्मों का जिम्मा गुरु पर जाता है। इसलिये मैंने नाम ही नहीं दिया लोगों को। सत्संग कराता हूं। किसी का गुरु नहीं बनता। क्यों नहीं बनता ? क्योंकि गुरु नाम तो है ज्ञान का, समझ का, विवेक का, विश्वास का, श्रद्धा का। यह देह कभीं गुरु नहीं हुआ। गुरु का जो जो उपदेश हैं वह तो मैं देता हूं। मेरे गुरु दातादयाल (महर्षि शिव) जिन्होंने मुझे यह काम दिया था, वह गुरु का रूप बतातें हैं। वह गुरु का रूप आपको सुनाता हूं :—

गुरु आदि मध्य अनन्त अदभुत, अमल अगम अगोचरम।
विभु विरज पार अपार निर्गुन, सगुन सत्य विशेशरम॥
जिहि मति लखे नहिं गति लखे, यह शुद्ध तत्व विचार है।
जो चरन कमल की ओट आला, भव से बेड़ा पार है॥

वह कहते हैं कि गुरु शुद्ध तत्व विचार का नाम है। शुद्ध तत्व विचार क्या है ? 'शिवसंकल्पमस्तु'। मन वचन और कर्म पर काबू रखना। यही सनातन धर्म की शिक्षा है। सनातन धर्म पहले गुरु परायण बनना पड़ता है। पहिले माता गुरु है, बहिन भाई गुरु हैं। स्कूल में मास्टर गुरु है। फिर सतगुरु गुरु है। इस गुरु की पदवी अधिक है। गुरु क्या करता है ? जिस तरह एक डाक्टर एम० डी० होता है, उसने मुर्दे चीरे हुये होते हैं, उसको हर एक बीमारी का पता होता है। जो रोगी उसके अनुसार उसको इलाज बताता है। इसी तरह वह गुरु नहीं है, जो सबको एक रास्ते पर हांकता है। जिस तरह रोग भिन्न-भिन्न हैं, उनके इलाज भिन्न-भिन्न हैं। इसी तरह हर एक प्रकृति वाले के लिये, उसकी प्रकृति, वातावरण, उसके मां बाप संस्कार, उसका देश काल और वस्तु को लेकर जो व्यक्ति उस का उपदेश करता है उसका नाम है गुरु।

गुरु विष्णु मूरति शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू ।
गुरु ब्रह्म है पर ब्रह्म हैं, यह सब सोच के मान तू ॥

गुरु उपदेश करता है । हमको क्या उपदेश किया ? मां ने उपदेश किया जैसे माँ के विचार थे जैसे बाप के बिचार थे, वैसे ही हम बने । जैसी हमारी सोसायटो आई वैसे ही हम बने । फिर गुरु के पास गये । गुरु ने कहा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रक्खो । यह सनातन धर्म की शिक्षा । २४-२५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य रक्खो । यह सनातन धर्म की शिक्षा है मेरी तो नहीं ? फिर उस ब्रह्मचर्य से लाभ ? देखो ! अशान्ति का सबसे अधिक कारण ९० प्रतिशत हमारे ब्रह्मचर्य का गिरना, छोटी आयु का विवाह, छोटी आयु का व्यभचार और हमारी छोटी आयु के विचार हैं । जितने आदमी अपने आप को अशान्त कहते हैं, अधिक चंचल हैं, इनका मुख्य कारण उनके बचपन के गलत बिचार, मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है । इसका सबूत मेरा जीवन है । मेरी शादी उस समय हुई जब मैं १३ वर्ष का था । १५ वर्ष को आयु में गृहस्थ में फंसा । खाँड खीर समझली । परिणाम अशान्ति का आना था । उस समय मुझे पता नहीं था । उस समय मेरे गुरु महाराज ने हिकमत अमली से पहिली लड़ाई में मुझको बसरा बगदाद भेज दिया । मैं बारह वर्ष वहाँ अकेला रहा । भक्ति भाव में रहा । मेरा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य कायम हो गया । मैं बड़ा सन्तुष्ट शान्त था । आनन्द पूर्वक रहता था । चूँकि सन्तान नहीं थी, दातादयाय (महर्षि ज़िव) ने कहा—फकीरचन्द ! अब अभ्यास छोड़ो । सन्तान पैदा करो । मैं घर में आया । मैंने फिर उसको खाँड़ और खीर समझ लिया । अधिक फँस गया । मेरी जो शान्ति यो वह चली गई । यह मेरा अनुभव है ।

मेरे पास सत्संगी आया करते हैं । एक माई मेरे पास आया करती है । बूढ़ी हो गई हैं । अभ्यास भी बड़ा करती है । शान्ति भी नहीं मिलती । समझ में नहीं आता था कि शान्ति क्यों नहीं मिलती । मैंने उससे कहा तुम्हारी शादी कब हुई ? उसने कहा जब मैं ९ वर्ष की थी । बच्चे कब से हुये ? मैं १३-१४ वर्ष की थी कि बच्चे पैदा होने शुरू हो गये । अब बताओ जिस आदमी का शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य समय से पहले गिर गया, अशान्ति उसके हिस्से में न आये ! हमारे मन की चंचलतायें बड़ी प्रबल हैं । उसका कारण है कि हम सनातन धर्म के सिद्धान्त से गिर गये । न सनातन धर्म के नियमानुकूल हमने सन्तान उत्पन्न की और न सनातन धर्म के नियमों पर हम चले । हम लाख अपने को सनातनी कहें हम सनातनी नहीं है । माथे पर तिलक लगा लेने से तो हम सनातनी नहीं बन जाते !

सनातन धर्म है पुरानी सभ्यता ! हमारे ऋषियों ने जो हमको बताया, उस पर न चलने से हम गिर गये यह मेरा अनुभव है । उसके प्रमाण में मैं उदाहरण देता हूं । मेरे पास सन १९४४ ई० मैं एक प्रोफेसर डबल एम०ए० इंगलैन्ड से आया बड़ा हट्टा कट्टा मेरे मकान पर आया । मैंने मकान नया बदला था । मुझसे कहने लगा—पण्डित जी ! मैं अशान्त रहता हूं । मैंने कहा तू व्यभिचारी है । उसको बड़ा क्रोध आया । उसने कहा आप झूंठ बोलते हो । मैंने कहा कैसे ? कहने लगा २५ वर्ष की आयु में मैंने शादी की । मैं धर्म से कहता हूँ मैंने २५ वर्ष तक किसी स्त्री को हाथ नहीं लगाया और न मैंने अपना ब्रह्मचर्य नष्ट किया । आपने कैसे कहा कि मैं व्यभिचारी हूं ! मैंने कहा तुम यह बताओ कि स्कूल में क्या सोच रहे थे ?

कहने लगा एक बात मैं करता था। नौजवान लड़कियों के ४०-५० फोटो अपने पास रखता था। आजकल नया वर्ग ऐसा करता है। किसी फोटो में छाती नंगी, किसी में पींठ नंगी, किसी में बगल नंगी, किसी में कुछ नंगा ! प्रतिदिन आध घन्टा उन फोटुओं को देखकर मनोरंजन किया करता था। मैंने कहा तुमने १०-१२ वर्ष तक ऐसे का ध्यान किया जिसमें काम का अंग था। अब छः वर्ष ऐसे पुरुष का ध्यान करो जिसने यह समझलो कि इसमें काम नहीं है। तब तुमको शान्ति मिलेगी।

यह जीवन के गुरु हैं जो मैं बता रहा हूं। यदि तुम्हारा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य ठीक नहीं, तुम लाख मेरे पाँव पड़ते रहो, लाख तुम गुरुओं के पैर दवाओ, तुमको शान्ति नहीं मिलेगी। तुम में नवयुवक बैठ होंगे। तुमको यदि गीता सुननी है तो यहाँ बहुत मठ भरे हैं, वहां चले जाओ अपना-अपना सौदा बेचते हैं। मैं सच्चा बेचता हूँ, अपनी बीती कहता हूं।

एक मेरे मित्र मेरे पास आये। मुझसे कहते हैं महाराज ! मेरा लड़का नवीं क्लास में फेल हो गया। मैंने कहा अफसोस है। कहने लगा भक्ति बड़ी करता है। मैंने कहा क्या भक्ति करता है ? कहने लगा घर के अन्दर छोटा सा कमरा बना हुआ है। वहाँ घन्टा दो घन्टा झाँझ लेकर जोर जोर से बजाता और गाता है। मैंने कहा तेरा लड़का दुराचारी हो गया। वह मेरा गुरु भाई था कहने लगा। क्या तुम्हारा दिमाग ठीक है ? मैंने कहा देख लेना। मुझे पता नहीं। कहने लगा इसका सबूत दो। मैंने कहा कि घर में कह दो कि बाबा फकीरचन्द बड़ा योगी-राज है, मनोकामनायें पूरी करता है। वह चला गया। फरीद कोट में मैं स्टेशन मास्टर था। सुबह समाधि से उठा, वह लड़का आगे बैठा था। मुझे कहता है बाबाजी ! रो पड़ा, एक लड़की

आती है वहाँ, । यह दूसरी जाति की है । मेरा उससे ६ महीने या साल भर से प्रेम हैं । मैंने अपने आपको खराब तो नहीं किया मगर उसके जाल में बुरी तरह फँसा हुआ हूं । मैं अशान्त रहता हूं । मैं बड़ा हँसा । मैंने कहा—तू चिन्ता न कर । तेरा बाप तुझे डाक्टर बनाना चाहता है । डाक्टर बन जा । मैं तेरी शादी उसी से करा दूंगा । उसको वचन दे दिया । उसके बाप को बुलाया उसको सब हाल बताया । पूछ गछ करने पर सच्चा मालुम हुआ । ऐ नौजवान वर्ग के लोगो ! नौजवान लड़कियां जो मेरे पास बैठी हैं, तुम मेरी बेटियां हो, मैं तुमको कहता हूं कि यदि मानसिक और शारीनिक ब्रह्मचर्य का ध्यान नहीं रक्खोगे तुमको या तो डाक्टर लूटेंगे या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे ।

होशियारपुर में मास्टर मोहनलाल के मकान पर सत्संग हो रहा था । पाँच सन्यासी गेरुआ कपड़े पहने हुये सत्संग में आ गये । सत्संग हुआ । मैं घर पर चला गया । वह आये । उन पांचों ने सष्टांग दण्वत किया । मैं उठ खड़ा हो गया । मैंने कहा महात्मन ! मुझे पाप में क्यों घसीटते हो । हम तो गृहस्थी हैं । हम आप लोगों का आदर मान करते हैं । महाराज ! यह बात नहीं । क्या बात है ? हम देहरादून में सत्संग सुनते थे । एक लेफ्टीनेंट कर्नल था । सन्यासी हुआ हुआ था । उसने सत्संग में कहा था कि मैं बहुत जगह घूमा मगर कोई सत्यवादी आध्यात्मिक पुरुष मैंने देखा तो एक फकीरचन्द देखा । हमने उससे सुना हुआ था । हम यहाँ होशियारपुर में आये । हमको पता लगा । आपके सत्संग में आये । हमारे सवाल का जवाव मिल गया । क्या जबाब मिला ? उन्होंने कहा महाराज ! हम सन्यासा हो गये । स्वप्नदोष हमको अब तक नहीं छोड़ते ।

आपने सत्संग में यह कहा था कि आपको स्त्री का त्याग किये हुये आज २८ वर्ष हो गये मगर साल दो साल के बाद किसी न किसी समय, जब कभी भोजन की बंद परहेजी होती है, मुझे भी स्वप्नदोष हो जाता है। हमको साहस हो गया। देखो हमारी अशान्ति का मुख्य कारण मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है। इसमें कुछ तो हमारे मां बाप का दोष है। मैंने तुमको बताया जब बच्चा मां के पेट में होता है तो मां बाप भोग करते है। यदि गर्भ में अर्जुन की बात को सुनकर अभिमन्यु चक्रव्यूह को बेध सकता है तो बच्चा पेट में होते हुये जब माँ बाप भोग करते हैं तो वह कामी क्यों न होगा ! कुछ तो माँ बाप हमारे चरित्र (Charactcer) के जिम्मेदार हैं और कुछ हम आप जिम्मेदार हैं।

मैंने कहा था सनातन धर्म की जै। मैं यह सनातन धर्म बोल रहा हूं। सनातन धर्म क्या सिखाता है। वह हमें सिखाता है वह उपाय जिससे हमारा लोक और परलोक दोनों सुधर जांय। तुम्हारा लोक तो तभी सुधरेगा जब तुम शुभ संकल्प रक्खो और चलोगे उन नियमों पर जो हमारे ऋषि कह गये। ऋषि क्या कह गये ? नाम करण संस्कार, गर्भाधान संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार आदि। सस्कार देना और इसमें शारीरिक ब्रह्मचर्य भी आ गया। यह है सनातन धर्म।

दूसरा कर्म धर्म क्या है ? विवाह ! आजकल हम विवाह करते हैं। लड़की में फैशन देखते हैं, धन देखते हैं। विवाह में गुण कर्म स्वभाव देखना पड़ता है। बीज अच्छे से अच्छा है। जमीन खराब है तो फसल नहीं होगी खाद ठीक ठीक नहीं होगी। इसी तरह गुण, कर्म, स्वभाव जब तक लडका व लडकी का देखा नहीं जाता, उनकी आपस में नहीं बनती। आजकल

प्रेम विवाह (Love Marriages) होते हैं। इस प्रेम विवाह ने दुनियां का नाश कर दियाहुआ है। सौ में से मेरे विचार से कोई तीन चार प्रतिशत प्रेम विवाह (Love Marriages) का आपस में प्रेम रहता होगा अन्यथा प्रेम नहीं रहता। हमारा कर्तव्य है धर्म। हम अपने कतव्य को नहीं निभाते। इसलिये मैं सनातन धर्म पर बोल रहा हूँ। सनातन धर्म क्या है ? हमारी पुरानी संस्कृति। यह मैं क्यों कह रहा हूं ? क्यों कि इस समय बहुत से फिरके (सम्प्रदाय) ऐसे हैं जो पुरानी संस्कृति को लिये फिरते हैं। जो पुरानी संस्कृति को समझता है। सनातन धर्म हमको पुरानी संस्कृति सिखाता है, जो हमारे ऋषि हमको कह गये।

इस मन को वश में करने के लिये हमको क्या करना है ? गुरु आज्ञा में रहना है। जब तक इस मन पर किसी का डण्डा नहीं है, किसी के आधीन नहीं है, किसी की आज्ञा नही मानता, तब तक मन छलाँगें मारता है। इसलिये सनातन धर्म का जो सबसे बड़ा नियम है वह है अदब, (शिष्टाचार)। प्राचीन काल में राजाओं के पास जब उसके पुत्र जाते थे तो खड़े रहते थे। कोई बात हुई तो जब तक पिता पूछता नहीं था उत्तर नहीं देते थे। वह हमारी सभ्यता चली गई। वह अदब चला गया। माँ बाप बच्चों का अदब नहीं करते और बच्चे माँ बाप का अदब नहीं करते। तुम्हारा देश या तुम्हारा कुल यदि नाश को प्राप्त न हो तो क्यों न हो ? क्योंकि हम सनातन धर्म को भूल गये। कबीर सहाब का कथन है :—

साधो यह मन है बड़ा जालिम।
जाको मन से काम परो है, तिस ही होय है मालुम ॥
मन के कारन जो उसकी छाया, तिहि छाया में अटके।

निरगुण सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके ॥
मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्व गुन कीन्हे।
तीन लोक माया वश कीन्हे, परै न काहू चीन्हे ॥
जो कोऊ कहे हम मन को मारा, जाके रूप न रेखा।
छिन छिन में कितनों रंग लावे, जे सपनेहु नहि डेखा ॥
रमातल इकइस ब्रह्मण्डा, सब पर अदल चलावै।
षट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥
सबके ऊपर नाम नि:अक्षर, तिहि लै मन को राखै।
तब मन की गति जान परे यह, सन्त कबीर मुख भाखै ॥

ऐ सत्संगियो ! जो मुझे गुरु मानते हैं मैं उनको गुरु मानता हूं। क्यों ? क्योंकि इस मन के रहस्य को समझने में आप लोगों ने मेरे साथ गुरु का काम किया है। गणेश (सत्संगी) पता नहीं यहाँ आया हुआ हो या नहीं, उसके अन्दर मेरा रूप प्रगट होता रहता है और प्रकाश में मेरा दर्शन करता रहता है। चूँकि मैं नहीं होता अतः मैं विवश हो गया हूं यह समझने के लिये कि मेरे अन्तर में जितने मन के खेल होते थे, वह माया के खेल होते थे, जितने रूप या दृश्य दिखाई पड़ते थे, सिद्ध शक्तियाँ आती थीं वह मेरे क्या सिद्ध हुई ? मन ही सिद्ध हुआ और तो कुछ नहीं हुआ ! मैं इस आवागवन से निकलना चाहता था। मेरा अपना मार्ग निर्वाण का है। मैं सन्त मत का अनुयायी हूं। चूँकि यह मेरे कर्म हैं पिछले जन्म के अथवा गुरु की आज्ञा है, इसलिये इस लाइन पर आपको सत्संग कराता हूं अथवा आप लोगों की दया से मैं उस नाम निरंजन को पकड़ गया जो मन रंग, माया से परे है। यह संसार जो है इसको इसको बनाने वाली माया है, वासना है। मैं वासना रहित पुरुष हूं, मार हो नहीं सकता था। जब मैं इस निर्वाण को प्राप्त करने के लिये अपने

गुरु महाराज को बहुत तंग किया करता था तो उन्होंने मुझको यह खेल खिलाया था। उन्होंने यह काम दिया नाम दान देने और सत्संग कराने का और कहा था फकीर ! तू यह न समझ ना कि तू किसी का बेड़ा पार करेगा। तुझ को सच्चे गुरु राधा-स्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में हो जायेंगे। अब आप लोग गणेश आदि जितने हैं, के कारण मेरे यह संशय भ्रम मिट गये। जो मैं मन के चक्रों में आया हुआ था, उनसे निकला मगर संसार को इससे निकलने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

तुम लोग यदि अपना लोक बनना चाहते हो तो जो सनातन धर्म के सिद्धान्त या नियम हैं 'शिवसकल्पमस्तु' अच्छे विचार, मन को उनमें लगाओ। मन को एक ओर अच्छे विचारों में लगाओ। सब की प्रकृति अलग अलग है। कोई एक आदमी है उसका मन बड़ा चंचल है। तुम उसको लाख कहो तुम दो घण्टे बैठकरर अभ्यास करो, वह नहीं कर सकता। उसका इलाज है उसको कर्म दो करने को। वह कर्म का अधिकारी हैं। जब वह कर्म करता हुआ निष्काम हो जायेगा, उस का मन शान्त हो जायेगा। यह एक ही तरीका या ढंग नहीं है कि सब के लिये एक ही रास्ता हो। इसको गुरु जानता है।

मैंने सत्संग शुरू किया था सनातन धर्म के विषय पर। मैंने आपको दो सत्संगों में सनातन धर्म की संस्कृति बतादी कि इस दुनियाँ में सुख चाहते तो माँ बाप अच्छी सन्तान पैदा करें। उनके जो संस्कार हों वह ठीक हों।

साइन्स से सिद्ध किया है कि मनुष्य का शरीर एक रेडियो स्टेशन हैं। जो जैसा होता है उसके अन्तर से वैसी ही किरणें निकलती रहती हैं, वैसे ही भाव निकते रहते हैं। जो आदमी

उसके सम्पर्क में आयेगा प्रेम के साथ एक की धारें दूसरे में जायेंगी । गुरु का आचरण, गुरु के विचार शिष्य पर जाते हैं और शिष्य के आचरण गुरु पर आते हैं । आते कब हैं ? जब प्रेम होता हैं । इसलिये मैं किसी से प्रेम नहीं करता । मैं यहां आता हूं । जब यहाँ से जाता हूं तो साल साल भर तक दामोदर आदि का ख्याल मुझे नहीं आता कि वह हैं या नहीं । यदि मैं तुम लोगों का ख्याल अपने अन्दर रक्खूँ तो तुम्हारा ध्यान ध्यान करूंगा या तुमको याद करूंगा तो तुम्हारे अन्दर जो अवगुण या गुण है वह मेरे अन्दर आयेंगे । इसका अनुभव मुझे जीवन में हुआ । कैसे हुआ ? मैं जो बात कहता हूं वह थ्योरी नहीं किन्तु प्रैक्टीकल कहता हूं । १६ दिसम्बर ६३ ई० को सुबह पाँच बजे मेरी स्त्री मर गई । बसरा बगदाद में भण्डारो (जो आचार्य है) के भाई का लड़का हेला स्टेशन पर नौकर था । उन्होंने मकान बदला था । जिस मकान में वह गये वहाँ लोगों ने कहा कि यहाँ भूत रहते हैं । उन्होंने कहा हम राधास्वामी हैं । हमें भूत क्या करेगा ! मगर उसके दिल में चोर था । जब वहाँ पहुंच गये तो उसकी स्त्री अभ्यास में बैठ गई । उसके अन्तर मैं मेरा रूप प्रगट हुआ । मेरा रूप उसको कहता है कि मेरी स्त्री मर गई । उसने अपने पति राधापति से कहा । राधा पति ने अपने बाप को हिन्दुस्तान में लिखा । यह घटना ठीक थी ।

अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि क्या तू उसे कहने के गया था कि मेरी स्त्री मर गई । नहीं, मैं नहीं गया । चूंकि उसने सच्चे दिल से मेरा ध्यान किया और जब मैं उसके सामने

स्त्री मर गई है तो इसका उसको ज्ञान हो गया। इसलिये सत्संगियो ! लोग महात्मा समझ के मुझे पूजते हैं यद्यपि मैं महात्मा नहीं हूं, टोपधारी सहाब हूं। मेरी शकल देखो तो वह महात्मा वाली हैं सही। इसलिये बजाय इसके कि तुम फकीरचन्द को याद करो, तुम अपने इष्ट को वह मानो जो परमतत्व, सब का आधार, कूटस्थ है। मुझे याद करोगे तो यही करोगे कि जो कुछ मेरे अन्तर है मेरे ख्याल को ले लोगे, मैं मनुष्य हूं। इसलिये कहा है—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अन्ध
हुखी होंय संसार में, आगे जम का फन्द॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा मेंहि।
कहें कबीर ता दास को तीन ताप भर माहि॥

इस नियम के अनुसार यदि मैं आपको प्यार करूं और प्यार मैं तभी करूंगा जब मुझे निजी स्वार्थ होगा, तो तुम्हारे विचार मुझ पर आते रहेंगे। इसलिये इस दौलत को लात मार दी। मैं यहाँ आया हूँ। आप लोगों से धन लेने नहीं आया। भूल जाना इस बात को। यह तो मेरा कर्म है। अपना कर्म भोगता हूं। तुम पर कोई अहसान नहीं करता। अतः पहिले अपना इष्ट बनाओ और उसे पूर्ण मानो !

आपको एक घटना सुनाता हूँ। यह मैं मानता हूं कि एक मनुष्य चाहे तो अपने विचार की शक्ति को दूसरे तक पहुंचा सकता है। दूसरे के विचार की शक्ति आ सकती है। मेरे पास इतनी सिद्ध शक्तियाँ हुई हैं कि यदि मैं उनकी पुस्तक बनाता तो बड़ी भारी मोटी पुस्तक बन जाती मगर मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि यह माया मार्ग है, जो सिद्ध शक्ति में फँस गया,

वता मन्दिर को आ रहा था । मेरा नौकर था जुगेन्द्र । वह रिक्शा चलाता था । उस समय रेल जालन्धर से आई थी । मैंने जुगेन्द्र से कहा कि इस गाड़ी में गन्ध आ रही है । कोई आदमी आ रहा है प्रेमी । पता नहीं कौन है । इसने कहा परसराम होगा । मैंने कहा परसराम नहीं है कोई और आदमी है । बात आई गई । मैं आकर समाधि में चला गया । जब उठा तो सत्संग कराने चला । वहाँ हंसराज घई (कानपुर वासी) आया हुआ था । वह सिर पर टेप रिकार्ड लेकर आया । इसके ख्याल की धार मेरे तक पहुंची ! उस समय मैंने घई को कहा—घई ! तुम वजाय मेरे याद करने के यदि उस मालिक को याद करो तो रेडियेशन के नियम के अनुसार तुम्हारे ख्याल की धार ऊंचे से ऊँचे लोक तक जा सकती है । इसलिये कहा :—

दुखिया को न सताइये, बुरी दुखी की आह ।
मुई खाल की साँस सों सार भसम हो जाय ॥

तो तुम्हारे विचार में इतनी शक्ति है । आज मैं जा रहा था । वहां एक कबीर पन्थी का आश्रम था । वह गा रहे थे—

मालिक दरवार में, कमी वस्तु की नाहिं ।
बन्दा मौज न पावई, चूक चाकरी माहिं ॥

चाकरी करनी । नहीं सच्चे बनो । अकेले बैठो । मालिक से सच्ची पुकार किया करो । उसके हजार आंख हैं, हजार हाथ हैं । तुम्हारी पुकार ऊपर के लोकों तक जा सकती है । यह रेडियेशन का नियम है । इसलिये आदेश है कि श्रेष्ठ महापुरुषों की संगत में बठो । उनकी संगत से लाभ उठाओ । यदि मेरी सगति में बैठने वाले आदमी को बशर्ते कि पुत्र, धन मान लेने न आया हो, केवल सत्संग के विचार से आया हो, मेरी संगति में बैठने से मानसिक शान्ति (Peace of mind) नहीं मिलती

तो मैं समझता हूं कि मेरे जीवन को धिक्कार है। वह स्त्री जो अपने पति को वश में नहीं कर सकती वह स्त्री फूहड़ है। मगर यदि वह नपुंसक है तब दूसरी बात है। अफसोस ! मैं पूर्ण सत बन नहीं सका। मुझ में अभी ९---१० प्रतिशत कमी है कम-जोरी है। मैं भी मनुष्य हूं। मैं गिरता रहता हूं मगर मैं कोशिश करता हूं कि अपने आपको सम अवस्था में रक्खूं। मेरे इस कहने का साराँश यह है कि हमारी सस्कृति क्या है ? उसी पर आ रहा हूं।

अच्छी सन्तान पैदा करो। जो गुरु मत देने वाले हैं वह अच्छे होने चाहिऐ क्योंकि मानव शरीर रेडियो स्टेशन है। बच्चा जब पैदा होता है उसको कोई छूता है जो व्यक्ति सबसे पहिले छूता है उसके जो प्रभाव उसमें थोड़े बहुत जाते हैं। यह मेरी परीक्षा की हुई बातें हैं। मेरे पास क्लर्क रहा करता था। उसके एक लड़की पैदा हुई वह २१ दिन तक रोवे ही रोवे वह मेरे पास आया। कहा बाबा जी ! क्या करूं ! मैं दुखी हूं। सारी रात कुंड़ा खटकाता रहता हूं। यह लड़की जब पैदा हुई रोती ही रहती हैं। मैंने कहा पहिले ये बताओ कि कहीं ऐसा नहीं है कि तेरी स्त्री कुछ लड़ाका सी हो,वह रोते रहा करती उसको मनाने के लिये गया हो तब भोग किया हो और गर्भ रह गया हो। या तो यह बात है या यह जिसने उसको सबसे पहले हाथ लगाया हो वह रोता होगा। वह चला गया। दफ्तर में मेरे साथ गया। कहने लगा कि जो दाई आई थी वह मातम में बैठी हुई थी। जब आदमी बुलाने गया, वह चली आई। वह रोती हुई आई क्योंकि जिसका जवान भाई मर जाय, तो बहिन को ही है। उसके संस्कार उस लड़की पर पडे। मैंने कहा इसका इलाज मैं कर देता हूं। मैंने फूल मंगवाये। राधास्वामी नाम

लिया और उसको दे दिये। कहा उसको २४ घण्टे फूलों में रक्खो वह ठीक हो गई। यह मेरा निजी अनुभव है।

यह जितना खेल है यह रेडियेशन का नियम है। इसका नाम सत्संग है। आज के सत्संग में मैंने बहुत कुछ कहा है। सनातन धर्म की जय! क्यों जय? क्योंकि इसने हमको सच्चीं शिक्षा दी। क्या शिक्षा दी? यही कि अच्छी सन्तान पैदा करो। मकरण संस्कार ठीक करो। अपने आचार व्यवहार ठीक । वच्चों को शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य की शिक्षा । सबसे अधिक उनको संगत अच्छी रक्खो। सबसे बड़ी गत तुम्हारी अपनी है बशर्ते कि घर में माँ बाप शान्त रहते । तुम देश के राजा के स्वभाव बदल दो, गुरु का बतीरा (आचार) बदल दो, घर के जो बूढ़े जो घर के चलाने वाले हैं उनको ठीक कर दो, दुनियाँ अपने आप ठीक हो जायेगी। आज के सत्संग में इतनी बातें प्रमाण दे देकर आपको बता दीं। अब तुम सबको छाती से लगा नहीं सकता। मेरा अंग वाणी है।

वाणी गुरु गुरु है वाणी, वाणी अमृत सारे।

इसलिये बचन सुनाता हूं, पुस्तकें लिखता हूं। मेरे वचन टेप रैकार्ड होते हैं लोगों के कल्याण के लिये। यहाँ बड़े-बड़े महापुरुष बैठ हुए हैं। हो सकता है मैं गलती पर हूं। यह दावा करना कि जो कुछ मैं कहता हूँ वही ठीक है यह मूर्खता का काम है कुदरत के रहस्य का किसी को पता नहीं लगा। कबीर अपना अनुभव कह गया। कृष्ण अपना अनुभव कह गये दाता-दयाल (महर्षि शिव) अपना अनुभव कह गये। अपनी अपनी बोलियाँ बोलकर सब चले गये। मैंने जो समझा अपनी कह चला मगर इतना विश्वास कराना चाहाता हूं कि मैंने जो कुछ कहा वह मैंने अपने क्रियात्मक जीवन में जो कुछ अनुभव किया, वह कहा। यदि गलती खाई हो तो क्षमा करना।

एक बात

ले० कुवेरनाथ श्रीवास्तव

मैं जब स्कूल पढ़ रहा था, तब मुझको काँग्रेस सम्बन्धी एक रोचक पुस्तकें प्राप्ति हुई मैंने उसको दातादयाल के पास भेज दिया। यह सोचकर कि वह उसको पढ़ कर प्रसन्न होंगे। दातादया ने कोई उत्तर पुस्तकों के हेतु नहीं दिया जिसको मुझे तीव्र अ थो। कुछ दिनों के बाद में उनके दर्शन के हेतु मैं राधास्वा धाम गया और उनका चरण स्पर्श करके राधास्वामी कहक खड़ा हुआ तो उन्होंने धाम के मैनेजर को बुलाकर कहा इनकी किताब इनको वापिस करो। मैं भौचक्का रह गया जब तक मैनेजर ने किताब लाकर मुझे दे दिया। दातादयाल ने कहा पहले घर में चिराग जलाकर तब मस्जिद में चिराग जलाओ। पहले लिख पढ़कर अपनी कमाओ। तब दूसरों की सहायता का प्रबन्ध करो। जब तुम स्वयं ही अपनी रोटी के हेतु दूसरे के आश्रित रहोंगे तो दूसरों को रोटी कहाँ से दे सकोगे। छात्रों को आन्दोलन में शामिल करना और शिक्षा का वहिष्कार करना उनको असभ्य बनाना हैं राम सरजू में डूब मरे कृष्ण को भीलों ने मार डाला। फिर गाँधी जी का भी यह हाल होगा। परम दयाल कहा करते थे, सुराज तो क्रान्ति दल वालों ने लिया गांधी जी ने तो सुराज नहीं लिया किन्तु सुराज लेने हेतु जिस हथियार का प्रयोग किया उससे जनता आचरुण हीन और अल्प दर्शी हो गई है। वह समय निकट है जब गांधो के अनुवाई खोज खोजकर गोट जावेंगे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

—न्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधा-रण भाषा में प्रचार करना।

—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वीं० पी० पीं० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य १०—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क मिलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजनी चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

अ० स० सम्पादक — महेशचन्द्र मीतल

सम्पादक

व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल,
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal ...